आर.एन.आई. पंजीयन क्र. 39596/82 (डाक पंजीयन MP/IDC/1462/2016-2019)

साप्ताहिक

मालव अँचल

वर्ष 47 अंक 05 (प्रति रविवार) इंदौर, 22 अक्टूबर से 28 अक्टूबर 2023 पृष्ठ-8 मूल्य 3 रुपये

इस बार फिर चौंकाने वाले कई नाम, विदिशा और गुना सीट होल्ड

भाजपा की पांचवीं सूची में 92 नाम

3 से गोलू शुक्ला, 5 से महेंद्र हडिया, डॉ. अंबेडकर नगर मऊ से सुश्री उषा ठाकुर को मिला मौका

भोपाल । मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी ने अपनी एक और सूची जारी कर दी। इस सूची में 92 नामों की घोषणा की गई है। इसमें 12 महिला हैं। चुनाव केंद्रीय समिति की बैठक में शेष 94 नामों पर चर्चा हुई है। इसके बाद ये सूची जारी की गई। बता दें कि गुना और विदिशा से भाजपा ने नाम रोके हैं। प्रदेश की 227 सीटों पर मुकाबला लॉक हो गए हैं।

बता दे कि भाजपा अब तक कुल 228 नाम पर मुहर लगा चुकी है। 2 सीटों पर नामों का एलान होना बाकी है। गौरतलब है कि भाजपा ने 17 अगस्त को पहली सूची जारी की थी। इसमें 39 नाम थे। फिर दूसरी सूची में भी 39 नाम सामने आए थे। इसमें तीन केंद्रीय मंत्री समेत सात सांसदों को टिकट दिए थे। इस सूची में तीन विधायकों के टिकट काट दिए थे। तीसरी सूची में एक नाम था। चुनावों की तारीख घोषित होते ही भाजपा ने चौथी सूची जारी की थी। चौथी सूची में भाजपा ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान समेत 25 मंत्रियों को टिकट दिए थे। 57 प्रत्याशियों की इस सूची में सभी वर्तमान विधायकों को टिकट दिए गए। अब पांचवीं सूची जारी की है। पांचवीं सूची भी कई दिनों से टल रही थी। लगातार कई बैठकों के बाद पांचवी सूची सामने आई है। कई लोग इसे भाजपा की रणनीति भी बता रहे हैं। कहना है कि कांग्रेस की सूची का इंतजार किया जा रहा था।

5वीं सूची में

विजयपुर से बाबूलाल मेवरा, जौरा से सूबेदार सिंह रजौधा सिकरवार, अम्बाह से कमलेश्वर जाटव, भिंड से नरेंद्र सिंह कुशवाहा, मेहगॉव से राकेश शुक्ला, ग्वालियर पूर्व से श्रीमती माया सिंह, ग्वालियर दक्षिण से नारायण सिंह कुशवाहा, भांडेर से घनश्याम पीरौनिया, पोहरी से सुरेंद्र राठखेडा धाकड़, शिवपुरी से देवेंद्र कुमार जैन, कोलारस से महेंद्र यादव, बमोरी से महेंद्र सिंह सिसोदिया, अशोकनगर से जसपाल सिंह, मुंगावली से विजेंद्र सिंह यादव, बीना से महेश राय, टीकमगढ़ से राकेश गिरी, जतारा से हरिशंकर खटीक, पृथ्वीपुर से शिशुपाल यादव, निवाड़ी से अनिल जैन, चंदला से दिलीप अहिरवार, बिजावर से राजेश शुक्ला, दमोह से जयंत मलैया, जबेरा से धर्मेंद्र सिंह लोधी, हटा से श्रीमती उमा खटीक, पवई से प्रहलाद लोधी, रैगांव से श्रीमती प्रतिमा बागड़ी, नागौद से नागेंद्र सिंह, अमरपाटन से रामखेलावन पटेल, सिमरिया से केपी त्रिपाठी, त्योथर से सिद्धार्थ तिवारी, मनगांव से नरेंद्र प्रजापति, गुढ़ से नागेंद्र सिंह, चितरंगी से श्रीमती राधा सिंह, सिंगरौली से रामनिवास शाह, देवसर से राजेंद्र मेश्राम, धौहानी से कुंवर सिंह टेकाम, व्यवहारी से शरद जुगलाल कौल, बांधवगढ़ से शिवनारायण सिंह, बहोरीबंद से प्रणय प्रभात पांडे, जबलपुर उत्तर से अभिलाष पांडे, सिहोरा से संतोष बरबेड़ा, मंडल से श्रीमती संपत्तियां उइके, बालाघाट से मौसम बिसेन, वारासिवनी से प्रदीप जायसवाल, केवलारी से राकेश पाल सिंह, लखनादौन से विजय उइके, तेंदूखेड़ा से विश्वनाथ सिंह, चुराई से लखन वर्मा, बैतूल से हेमंत विजय खंडेलवाल, टिमरनी से संजय शाह, सिवनी मालवा से प्रेम शंकर वर्मा, होशंगाबाद से सीताशरण शर्मा, पिपरिया से ठाकुरदास नागवंशी, भोजपुर से सुरेंद्र पटवा, बासौदा से हरिसिंह रघुवंशी, कुरवाई से हरिसिंह सप्रे, शमशाबाद से सूर्य प्रकाश मीणा, भोपाल दक्षिण-पश्चिम से भगवानदास सबनानी, आस्टा से गोपाल सिंह, नरसिंहगढ़ से मोहन शर्मा, ब्यावरा से नारायण सिंह पवार, राजगढ़ से अमर सिंह यादव, सारंगपुर से गौतम टेटवाल, सुसनेर से विक्रम सिंह राणा, शुजालपुर से इंदर सिंह परमार, कालापीपल से घनश्याम चंद्रवंशी, बागली से मुरली भवरा, मंधाता से नारायण पटेल, खंडवा से कंचन मुकेश तंवे, पंधाना से श्रीमती छाया मोरे, नेपानगर से सुश्री मंजू राजेंद्र दादू, बुरहानपुर से श्रीमती अर्चना चिटनीससे बड़वा से सचिन बिरला, खरगोन से बालकृष्ण पाटीदार, भगवानपुरा से चंद्रसिंह वामक्ले, सेंधवा से अंतर सिंह आर्य, जोबट से विशाल रावत, सरदारपुर से बेल सिंह भूरिया, मनावर से शिवराम कनोज, धार से श्रीमती मीना विक्रम वर्मा, इंदौर 3 से राकेश गोलू शुक्ला, इंदौर 5 से महेंद्र हडिया, डॉ. अंबेडकर नगर मऊ से सुश्री उषा ठाकुर, महिदपुर से बहादुर सिंह चौहान, उज्जैन उत्तर से अनिल कालूहेड़ा, बड़नगर से जितेंद्र पांडे, रतलाम ग्रामीण से मथुरालाल डाबर, जावरा से राजेंद्र पांडे, अलॉट से चिंतामणि मालवीय, गरोठ से चंद्रसिंह सिसोदिया, मानस से अनिरुद्ध मारू, नीमच से दिलीप सिंह परिहार।

नॉर्थ-ईस्ट और जम्मू-कश्मीर में उग्रवाद की घटनाएं 65 फीसदी घटी-अमित शाह

केंद्रीय गृह मंत्री ने पुलिस स्मृति दिवस पर राष्ट्रीय पुलिस स्मारक में शहीदों को दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली । केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को पुलिस स्मृति दिवस पर राष्ट्रीय पुलिस स्मारक में पहुंचकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। इस दौरान आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आतंकवाद, नक्सलवाद, वामपंथी चरमपंथ और पूर्वोत्तर में उग्रवाद की घटनाओं में 65 प्रतिशत की कमी आई है। उन्होंने कहा कि देश के तीन हॉटस्पॉट-एलडब्ल्यूई (वामपंथी चरमपंथ से प्रभावित राज्य), पूर्वोत्तर और जम्मू-कश्मीर- में अब शांति स्थापित हो रही है। शहीदों को श्रद्धांजलि देने के बाद उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए गृहमंत्री ने कहा कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने आतंकवाद के खिलाफ बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करने की नीति को कायम रखते हुए कड़ा कानून बनाया है। उन्होंने कहा कि सरकार पुलिस बल के आधुनिकीकरण में पुलिस प्रौद्योगिकी मिशन की स्थापना कर उसे दुनिया में सर्वश्रेष्ठ आतंकवाद रोधी बल बनाने की दिशा में काम कर रही है। शाह ने कहा कि मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने आपराधिक न्याय प्रणाली में व्यापक बदलाव के लिए संसद में तीन विधेयक पेश किए हैं। ये तीन विधेयक 150 साल पुराने कानूनों की जगह लेंगे और सभी नागरिकों के संवैधानिक अधिकार की गारंटी देंगे।

शाह ने कहा कि प्रस्तावित कानून में भारतीयता की झलक होगी। पुलिसकर्मियों के प्रयासों और उपलब्धियों की बदौलत आतंकवाद, वामपंथी चरमपंथ और पूर्वोत्तर में उग्रवाद की घटनाओं में 65 प्रतिशत की कमी आई है। चाहे आतंकवादियों से लड़ना हो, अपराध को रोकना हो, भारी भीड़ के सामने कानून-व्यवस्था बनाए रखना हो या आपदा के समय ढाल बनकर लोगों की रक्षा करना हो, पुलिसकर्मियों ने हर स्थिति में खुद को साबित किया है।

सुप्रीम कोर्ट की अहम टिप्पणी

मामलों के निपटारे में देरी से न्याय व्यवस्था से भरोसा उठ जाएगा

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने मामलों के निपटारे में देरी पर चिंता जाहिर की है। शीर्ष अदालत ने शुक्रवार को कहा कि अगर कानूनी प्रक्रिया धीमी गति से आगे बढ़ती है तो वादियों का (न्यायिक प्रणाली से) मोहभंग हो सकता है। इसने यह भी कहा कि पुराने मामलों की त्वरित सुनवाई और निपटान सुनिश्चित करने के लिए उच्च न्यायालयों को निर्देश जारी किए गए हैं। न्यायमूर्ति एस रवींद्र भट और न्यायमूर्ति अरविंद कुमार की पीठ ने लंबित मामलों पर राष्ट्रीय न्यायिक डाटा ग्रिड (एनजेडीजी) के देशव्यापी आंकड़ों का हवाला दिया और कहा कि इस मुद्दे से निपटने के लिए बार और बेंच के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है। पीठ ने पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में 50 साल से अधिक समय से लंबित कुछ पुराने मामलों का जिक्र करते हुए कहा, कानूनी प्रक्रिया धीमी गति से चलने पर वादियों का मोहभंग हो सकता है। हमने अपनी पीड़ा व्यक्त की है जहां एनजेडीजी के अनुसार कुछ मुकदमे 65 साल से अधिक समय से लंबित हैं।

न्यायमूर्ति कुमार ने कहा, अगर यह देरी जारी रहेगी तो वादी न्यायिक प्रणाली में भरोसा खो देंगे। वादियों को बार-बार स्टे की मांग को लेकर सतर्क रहना चाहिए। उन्हें पीठासीन अधिकारियों की अच्छाई को अपनी कमजोरी के रूप में नहीं लेना चाहिए। न्यायाधीशों ने लंबित मामलों से निपटने के लिए 11 निर्देश जारी किए। पीठ ने कहा कि पांच साल से अधिक समय से लंबित मामलों की निगरानी संबंधित उच्च न्यायालयों द्वारा किए जाने की आवश्यकता है।

संपादकीय

नेताओं की नैतिकता का चीर हरण

पिछले एक दशक में भारतीय राजनीति में नेताओं के वास्तविक चरित्र का खुलासा भारतीय राजनीति के नेता ही आमजन के बीच करते हुए नजर आ रहे हैं। 2014 के बाद से भारतीय राजनीति के तौर तरीके बदल गए हैं। सत्ता पक्ष कभी कोई अपराध, भ्रष्टाचार और घोटाला नहीं करता है, जबकि सारे अधिकार सत्ता पक्ष के पास होते हैं। जो विपक्ष में होते हैं, उनके खिलाफ सरकार जांच कराती है। विपक्षी नेता ही भ्रष्टाचारी होते हैं। पिछले कई वर्षों से यह खेल जिस तरीके से खेला जा रहा है। राजनेता ही एक-दूसरे का चीरहरण कर उसे नंगा करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे हैं। ईड़ी और सीबीआई द्वारा जिस तरह से विपक्षी नेताओं के कृत्यों को उजागर कर वर्षों तक जेल में रखा जा रहा है, विपक्ष ने भी सत्ता पक्ष के ऊपर बड़े-बड़े आरोप लगाए हैं। यह अलग बात है कि उनकी जांच सरकार ने नहीं कराई। माना गया कि सत्ता पक्ष में जो लोग बैठे हैं, वह पूर्णता ईमानदार हैं। अत- जांच एजेंसी ने भी आरोपों की जांच करने की जहमत भी नहीं उठाई। राजनेताओं द्वारा राजनीति में आने के बाद कैसे कमाई की जाती है, इसके एक-एक तरीके को सत्ता पक्ष और विपक्ष उजागर करता नजर आ रहा है। जनता को भी यह पता लग गया है कि नेता बनने के बाद किस तरीके से राजनेता करोड़पति अरबपति और खरबपति बनते हैं। हाल ही में लोकसभा की सदस्य महुआ मोइत्रा द्वारा पैसे लेकर संसद में सवाल पूछने का एक आरोप लगाया गया है। लोकसभा के सदस्य निशिकांत दुबे ने कारोबारी दुनिया के साथ मिलकर कैसे एक दूसरे को निपटने का काम करते हैं। लोकसभा अध्यक्ष से शिकायत करते हुए महुआ मोईत्रा की सदस्यता खत्म करने की मांग की है। इसमें प्रमुख कारोबारी गौतम अडानी के साथ-साथ हीरानंदानी समूह के पुत्र दर्शन हीरानंदानी, भारतीय जनता पार्टी के लोकसभा सदस्य निशिकांत दुबे, पत्रकार सुचिता दलाल एक-दूसरे की पोल खोलते हुए नजर आ रहे हैं। दर्शन हीरानंदानी दुबई में रहते हैं। सांसद महुआ मोईत्रा द्वारा उन्हें अपनी संसद की लॉगिन पासवर्ड आईडी, लोकसभा मे ऑनलाइन प्रश्न पूछने के लिए अधिकृत कर दिया था। जब इस मामले की शिकायत लोकसभा अध्यक्ष को की गई, उसके बाद से यह मामला तूल पकड़ता हुआ नजर आ रहा है। पिछले एक दशक में सत्ता पक्ष और विपक्ष के राजनेताओं द्वारा एक-दूसरे की पोल खोलकर जनता के सामने नंगा किया जा रहा है। किस तरह सांसद और विधायक, कारोबारी जगत से मिलकर नोट उगलने वाली एटीएम मशीन लगा लेते हैं, एक-एक करके अब यह सब खुलकर जनता के सामने आने लगा है। इसका सबसे बड़ा नुकसान राजनेताओं और उनके राजनीतिक दलों को हो रहा है। सारे नेता सब एक-दूसरे का चीर हरण करने में लगे हुए हैं, जिसके कारण जनता के सामने अपने नेताओं का वास्तविक चरित्र खुलकर सामने आ रहा है। इस सारे विवाद में कटना तो खरबूजे को ही है। यहां पर खरबूजा गौतम अडानी है। इन दिनों सत्ता पक्ष और विपक्ष के लोग किसी को घेरने का काम कर रहे हैं, तो वह गौतम अडानी है। निश्चित रूप से आगे चलकर सबसे बड़ा नुकसान अदानी का ही होना है। छुरा खरबूजे पर गिरे या खरबूजा पर छुरा पर गिरे, अंत में कटना तो खरबूजे (गौतम अडानी) को ही है। यह अलग बात है कि गौतम अडानी और प्रधानमंत्री मोदी के रिश्ते पर इसका असर पड़ने लगा है। भारतीय राजनीति में जिस तरह की साजिश हो रही है, सत्ता में बने रहने के लिये नीति-अनीति के स्थान पर जिस नीति से सत्ता सुरक्षित रहे, उसे ही राजनीति मान लिया गया है। सत्ता शक्तिशाली है, अत- लोकतंत्र की सभी संवैधानिक संस्थाये सत्ता के इशारे पर काम कर रही हैं। महाभारत के समयकाल में जब द्रोपदी का चीर हरण हो रहा था, उस समय राज दरबार में गंगा पुत्र भीष्म आंख मूंदकर बैठे रहे। द्रोपदी का चीर हरण होता रहा। उनकी रक्षा के लिये भगवान कृष्ण आये थे। अब संसद में चीर हरण रोकने के लिय कौन आएगा?

इन चुनावों में विरोधियों से नहीं अपनों से जूझते दल

ललित गर्ग

पांच राज्यों के चुनावों की सरगर्मियां उग्र से उग्रतर होती जा रही है, चुनाव प्रचार अब धीरे-धीरे चरम पर पहुंच रहा है। विशेषतः राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में सत्ता के दावेदारों में लोक-लुभावन वादों एवं रेवड़ियां बांटने की होड़ लगी हुई है। येन-केन-प्रकारेण सत्ता हथियाना इन चुनावों का चरम लक्ष्य है। इन तीनों ही प्रांतों में चुनावों की सबसे खास बात यह है कि इन राज्यों में कांग्रेस पार्टी एवं भाजपा के बीच सीधा मुकाबला है। जैसे-जैसे उम्मीदवारों की सूचियां सामने आ रही है, विरोध का स्वर उभर रहे हैं, उग्र विरोध को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि इन चुनावों में परायों से अधिक डर इस बार 'अपनों' का चुनौती बनेगा।

वर्ष 2023 के ये चुनाव अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण बन रहे हैं। जटिल से जटिलतर होते हालातों एवं राजनीतिक परिदृश्यों में यह स्पष्ट हो रहा है कि इन राज्यों के ये चुनाव लोकसभा चुनावों का सेमीफाइनल बन रहा है। जबकि मतदाताओं के सामने राज्य व राष्ट्र के बारे में अलग-अलग विचार व अवधारणाएं होती हैं। दोनों ही प्रमुख पार्टियां मतदाताओं को लुभाने एवं उनकी मानसिकता को समझते हुए चुनावी मुद्दों को उछाल रही है। कांग्रेस पार्टी का अलग-अलग राज्यों का क्षेत्रीय नेतृत्व वे मुद्दे उठा रहा है जिनसे राज्यों के लोग ज्यादा से ज्यादा जुड़ें जबकि भाजपा की कोशिश है कि राज्यों के मुद्दों को केन्द्र में रखते हुए राष्ट्रीय विकास को मतदाताओं के सामने रखा जाये। भाजपा का मुख्य जोर विकास कार्यों एवं राष्ट्र विकास की योजनाओं पर है। दोनों पार्टियों में एक और मूलभूत अन्तर है कि भाजपा जहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम पर चुनाव अभियान को गति दे रहा है, वहीं कांग्रेस क्षेत्रीय नेताओं को आगे कर रही है। जहां तक चुनावों में जा रहे तेलंगाना व मिजोरम राज्यों का सवाल है तो इनमें भी कांग्रेस पार्टी इन राज्यों की जरूरत के मुताबिक अपना विमर्श खड़ा करने की कोशिश कर रही है और भारत राष्ट्र समिति व मिजो नेशनल फ्रंट पार्टियों के सामने कड़ी चुनौती पेश करना चाहती है।

भाजपा इन चुनावों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को प्राथमिकता दे रही है। भाजपा ने टिकट वितरण में इस बार तीनों राज्यों के क्षत्रपों की जगह भारतीय जनता पार्टी के केन्द्रीय संगठन और संघ की राय को महत्त्व दिया है। भाजपा ने जीत को सुनिश्चित करने के लिये अनेक मोर्चों एवं स्तरों पर कार्यकर्ताओं की टीमों का गठन किया है, एक और बड़ा बदलाव उम्मीदवारों के चयन में पार्टी ने यह किया है कि पहली बार पार्टी ने बड़ी संख्या में सांसदों पर दांव खेला। कई सांसदों को न चाहते हुए भी विधानसभा चुनाव लड़ना पड़ रहा है। जारी हुई सूचियों में अनेक विधायकों के टिकट कट गये हैं जिससे पार्टी में बगावत के स्वरों एवं तेवरों की तीव्रता सामने आई है, जो आलाकमान की चिन्ताओं को बढ़ा रहा है। सभी टिकट घोषित होने के बाद असंतोष के सुर तेज होने की व्यापक संभावनाओं को देखते हुए राजस्थान में पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने तो मध्यप्रदेश में गृहमंत्री अमित शाह ने कमान संभालते हुए नाराजगी को दूर करने का बीड़ा उठाया है। राज्य स्तर पर बगावती स्वरों से उत्पन्न नुकसान को नियंत्रित करने के लिये टीम बनाई गई है। चूंकि प्रत्याशी चयन में संघ की भूमिका रही है इसलिए पर्दे के पीछे बगावत को शांत करने का जिम्मा भी संघ को सौंपा गया है।

कांग्रेस पार्टी भी लगभग ऐसी ही चुनौतियों से जूझ रही है। उसके सामने राजस्थान और छत्तीसगढ़ में अपनी सत्ता को दोहराने एवं मध्यप्रदेश में भाजपा को पछाड़ने की पूरी आस है, आशा एवं संभावनाभरे इन परिदृश्यों में उसे भी लग रहा है कि विरोधियों से मुकाबले में 'अपनों' से जूझने की समस्या है। कांग्रेस ने क्षेत्रीय नेताओं एवं कार्यकर्ताओं को प्राथमिकता दी है एवं स्थानीय मुद्दों को आगे किया है। टिकट के दावेदारों और उनके समर्थकों के उग्र तेवर से कांग्रेस आलाकमान भी सकते में है। प्रश्न है कि नाराज कार्यकर्ताओं का असली विरोध चुनावी रणक्षेत्र में क्या रंग दिखाता है। दोनों ही प्रमुख पार्टियों के सामने विरोधियों से ज्यादा अपनो का खतरा मंडरा रहा है। अक्सर चुनावों में इन स्थितियों का परिणामों पर सीधा असर पड़ता रहा है। जो भी चुनाव परिणाम आयेंगे उनसे कांग्रेस एवं भाजपा दोनों ही पार्टियों का भविष्य सीधे अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों से बंध जायेगा। उत्तर भारत के हिन्दी क्षेत्र के लिये भाजपा ही सर्वप्रिय पार्टी मानी जाती है। इन राज्यों में राजस्थान, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ माने जाते हैं। इन तीनों ही राज्यों में इस बार व्यापक फेरबदल की संभावनाएं स्पष्ट दिखाई दे रही है। भले ही पिछले 2018 के चुनावों में भी ऐसा ही उलटफेर हुआ हो और कांग्रेस ने तीनों ही राज्यों में सरकारें बनाई थीं मगर कुछ महीने बाद ही हुए लोकसभा चुनावों में भाजपा ने कांग्रेस का सूपड़ा साफ कर दिया था। भारत के राजनीति में कुछ भी निश्चित नहीं कहा जा सकता, विशेषतः मतदाताओं के बदलते मिजाज के बारे में कोई आकलन नहीं किया जा सकता है। विधानसभा में जीत दिलाने वाले मतदाता लोकसभा चुनावों में हार का सेहरा बांध देते हैं।

कांग्रेस पार्टी भाजपा की चुनावी रणनीतियों पर गहरी नजरे गढ़ाए हुए है। कुछ मामलों में वह भाजपा की नीतियों को अपनाने में भी कोई हर्ज नहीं मान रही है। कतिपय मामलों में कांग्रेस पार्टी भी इन राज्यों के चुनावों को क्षेत्रीय के साथ-साथ राष्ट्रीय मुद्दों को अपनाते हुए आगे बढ़ रही है। पांच राज्यों के ये चुनाव वास्तव में असाधारण चुनाव हैं क्योंकि राजस्थान व छत्तीसगढ़ में सत्ता पर काबिज कांग्रेस को अपने पिछले पांच सालों के काम के बूते पर जनता का मत एवं मन जीतना है और मध्यप्रदेश में यही काम भाजपा को करना है। जिस प्रकार इन तीनों राज्यों की सरकारों ने जनकल्याण एवं सामाजिक सुरक्षा की विभिन्न योजनाएं शुरू की हैं, लोकलुभावन घोषणां एवं मुफ्त की रेवडियां बांटी है। राजस्थान में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने चुनाव की आहट के साथ बहुत सी ऐसी योजनाएं शुरू की हैं जिनसे गरीब व कम आय वाले लोगों के साथ किसानों को भी लाभ पहुंचा है। लेकिन मूलभूत प्रश्न है कि चुनाव से ठीक पहले ही सत्ताधारी दलों को जन-कल्याण की चिन्ता क्यों सताने लगती है? प्रश्न है कि लोक कल्याणकारी राज के सिद्धान्त के अनुरूप गरीब वर्गों की सामाजिक व आर्थिक सुरक्षा का ढांचा खड़ा करने की वैधानिक व्यवस्था ये राजनीतिक दल क्यों नहीं करते? राजस्थान में गहलोत सरकार ने अपनी कुछ जनकल्याण की योजनाओं को कानूनी जामा भी पहनाया है परन्तु शिक्षा व स्वास्थ्य क्षेत्र में जन उपकारी योजनाओं को वह कानूनी रूप में देखना चाहते हैं। बात केवल राजस्थान की नहीं है, सभी प्रांतों एवं केन्द्र में ऐसी व्यवस्था बननी ही चाहिए और ऐसे ही मुद्दें चुनावी मुद्दें भी बनने चाहिए।

चुनावी मौसम में ही मुफ्त की रेवड़िया बांटना एवं लोकलुभावन वादों की होड़ लगाना क्या लोकतंत्र का मखौल नहीं है? मतदाता को ठगने एवं लुभाने की इन चेष्टाओं पर सुप्रीम कोर्ट एवं चुनाव आयोग अनेक बार चेता चुका है, लेकिन नसीहत देने से आगे बढ़कर कठोर कदम उठाने होंगे। कठोर कार्रवाई के अभाव में ही हमारा लोकतंत्र कितनी ही कंटीली झाड़ियों में फँसा पड़ा है। विडम्बना है कि आज जनता की बुनियादी समस्याओं का हल एवं उसकी खुशहाली का रास्ता चुनावों से होकर नहीं जाता। हर चुनाव में आभास होता है कि अगर इन कांटों के बीच कोई पगडण्डी नहीं निकली तो लोकतंत्र का चलना दूभर हो जाएगा। फिर भी कोई सारथि नहीं बनता। लोकतंत्र में जनता की आवाज की ठेकेदारी राजनैतिक दलों ने ले रखी है, पर ईमानदारी से यह दायित्व कोई भी दल सही रूप में नहीं निभा रहा है। ÷सारे ही दल एक जैसे हैं÷ यह सुगबुगाहट जनता के बीच बिना कान लगाए भी स्पष्ट सुनाई देती है। राजनीतिज्ञ पारे की तरह हैं, अगर हम उस पर अँगुली रखने की कोशिश करेंगे तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलेगा। सभी दल राजनीति नहीं, स्वार्थ नीति चला रहे हैं। क्या पांच राज्यों के चुनाव एक बार फिर इसी स्वार्थ-नीति के शिकार होंगे? मतदाता को जागना होगा।

स्मार्ट सिटी कंपनी के इंजीनियरों का एक और अनस्मार्ट काम

बिना डीपीआर ही बना दी चंद्रभागा ब्रिज से जवाहर मार्ग तक की सड़क

इंदौर। स्मार्ट सिटी कंपनी के इंजीनियर और अधिकारियों के बहुत से अनस्मार्ट कार्य चर्चा में है। अब जवाहर मार्ग से चंद्रभागा ब्रिज तक की रिवरसाइड सड़क की ही बात की जाए तो इससे स्मार्ट वर्क और शायद ही कोई दूसरा होगा। स्मार्ट सिटी कंपनी के इंजीनियरों ने यह सड़क बिना डीपीआर के ही बना दी है। इस सड़क के निर्माण पर 12 करोड़ से अधिक 'लोकधन' खर्च किया गया है। इसके बाद भी इस सड़क की स्पेशिफिक डीपीआर नहीं बनाई गई है। यह सड़क को रिवर फ्रंट डेवलपमेंट प्लान का हिस्सा बताया जा रहा है। इसका बेस बनाने में 1 मीटर से अधिक काली मिट्टी भी भरने की बात सामने आई है।

जानकारी अनुसार जवाहर मार्ग के ट्रैफिक का लोड कम करने के लिए जवाहर मार्ग से चंद्रभागा ब्रिज तक यह सड़क बनाई जा रही है। इस सड़क पर 12 करोड़ से अधिक लोकधन खर्च होना है। इस सड़क को बनाने के लिए स्मार्ट सिटी कंपनी के इंजीनियर और नगर निगम इंजीनियरों ने शुरू से ही मनमानी की है। सड़क बनाने के लिए वास्तविक डीपीआर (डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट) की कापी जब स्मार्ट सिटी कंपनी में आरटीआई आवेदन लगाकर मांगी तो उनके द्वारा जो कॉपी दी गई है उसमें स्पेशिफिक सड़क के बारे में डीपीआर न होते हुए कान्हा रिवर फ्रंट डेवलपमेंट की डीपीआर है। इस बारे में स्मार्ट सिटी कंपनी के अधिकारियों का कहना है कि जो डीपीआर है वह दे रहे हैं। वह सड़क का रिवर फ्रंट डेवलपमेंट का एक हिस्सा है। इससे एक यह प्रश्न उठना लाजिमी है कि 12 करोड़ से अधिक की सड़क बनाई जा रही है और इसकी डीपीआर ही नहीं बनाई गई है। मामले में यह भी बात सामने आई की करीब एक वर्ष पूर्व एक व्यक्ति ने डीपीआर की कॉपी मांगी थी तो उसे आरटीआई के तहत अलग दस्तावेज प्रदान किए गए हैं।

80 फ़ीसदी कम हो चुका है सड़क का-जवाहर मार्ग से चंद्रभागा ब्रिज तक बनाई जा रही यह सड़क का 80प्र. कार्य पूर्ण हो चुका है। सड़क के एक हिस्से में तो ट्रैफिक भी दौड़ना शुरू हो गया है। सड़क के मध्य में स्थित एक मंदिर के कारण पूर्ण सड़क बनने में बाधा आ रही है। दो आवेदकों को आरटीआई में दी डीपीआर की अलग-अलग कॉपी-करीब 1 वर्ष पूर्व एक व्यक्ति ने आरटीआई के तहत सड़क की डीपीआर की कॉपी मांगी थी। उसे जो दस्तावेज दिए गए वह अन्य दस्तावेज हैं। वर्तमान में करीब एक महीना पूर्व भी एक आवेदक ने इसी सड़क की डीपीआर कि जब कॉपी मांगी तो उसे अन्य दस्तावेज दिए गए हैं। दोनों ही दस्तावेज सड़क की डीपीआर न होते हुए अन्य दस्तावेज प्रतीत होते हैं। ऐसे में यह सवाल उठता है कि क्या सड़क बनते बनते डीपीआर भी बदल गई, जबकि सड़क की स्पेशिफिक डीपीआर दोनों ही दस्तावेज में नहीं है।

जैन समाज के कार्यक्रम में शामिल हुए कांग्रेस प्रत्याशी

समस्या पैदा करना और फिर उसका समाधान करने की फितरत करने वालों से बचकर रहे-शुक्ला

इंदौर। विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 1 के कांग्रेस प्रत्याशी संजय शुक्ला ने कहा है कि जैन समाज के किसी भी काम के लिए आधी रात को भी मैं हमेशा खड़ा रहूंगा। समाज जनों को चाहिए कि समस्या पैदा करने और फिर उसका समाधान करने की फितरत करने वालों से सावधान रहें। शुक्ला यहां जैन समाज के द्वारा आयोजित धर्म रक्षा सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस सम्मेलन का आयोजन आदिनाथ बाग, रामचन्द्र नगर में किया गया। इस आयोजन में शुक्ला ने कहा कि मैंने तो जीवन में मानवता की सेवा का प्रण लिया है। यही कारण है कि हर व्यक्ति को उसकी आस्था के अनुसार धर्मस्थल की यात्रा कराता हूं। धर्म शास्त्रों की कथा सुनवाता हूं और धर्म के बताए हुए रास्ते पर चलने की कोशिश करता हूं। जैन धर्म तो हमेशा से अहिंसा के प्रवर्तक धर्म के रूप में माना जाता है। कांग्रेस का सिद्धांत भी अहिंसा है। इसी सिद्धांत से कांग्रेस ने देश को आजादी दिलाई है। उन्होंने कहा कि जैन समाज के सामने या जैन समाज जनों के सामने यदि कभी भी कोई समस्या आती है तो उसे समस्या के समाधान के लिए आधी रात को भी संजय शुक्ला मौजूद रहेगा। पिछले 5 सालों में आपने देखा है कि जब भी आपके समाज की ओर से कोई आवाज उठाई गई तो सबसे पहले आपके पास आकर संजय शुक्ला खड़ा हुआ है। मैंने 5 साल के अपने कार्यकाल के दौरान किसी भी समाज के साथ कोई भेदभाव नहीं किया है। हर समाज को पूरा सम्मान दिया है। हर धर्म को पूरा सम्मान दिया है और हर इंसान को पूरा सम्मान दिया है। इस बार के चुनाव में आप अपने इस बेटे का साथ देकर पूरे देश को संदेश दे दीजिए की राजनीति भाषण बाजी और जुमलेबाजी के लिए नहीं है। सेवा के लिए है। उन्होंने जैन समाज जनों को ताकीद देते हुए कहा कि उन लोगों से सावधान रहें जो की समस्याएं पैदा करते हैं और फिर उनके समाधान के नाम पर आपको गुमराह करते हैं। इस सम्मेलन में विनय बाकलीवाल, संजय बाकलीवाल, सुरेश मिन्डा, पवन जैन , मनीष अजमेरा, कैलाश मामा, डा. जिनेंद्र जैन, राखी राकेश वर्मा, संजय बाकलीवाल, सुनील गोधा सहित सहित वरिष्ठ समाजजन उपस्थित थे।

राऊ से महू के बीच पटरी दोहरीकरण दिसंबर में होगा पूर्ण

गिट्टी बिछाने का काम हुआ खत्म, पटरियां डालना बाकी

इंदौर। राऊ से महू के बीच रेल लाइन दोहरीकरण का काम जल्दी ही पूरा होने वाला है। दिसंबर में इस रूट पर सभी काम पूरे कर निरीक्षण किया जा सकता है। इसके लिए रेलवे दिसंबर में ब्लाक लेकर निरीक्षण पूरा कर सकता है। रूट पर गिट्टी बिछाने का काम पूरा हो चुका है और अब सीमेंट के पोल बिछाकर पटरियां डाली जाएंगी। राऊ से महू के बीच 9.5 किमी लंबे रेल रूट का दोहरीकरण का कार्य करीब डेढ़ साल पहले दोबारा शुरू किया गया। अब अंतिम चरण में रेल पटरियां बिछाकर इलेक्ट्रिक के कार्य किए जाएंगे। संभावना है कि नवंबर में सभी काम पूरे कर निरीक्षण की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। गौरतलब है कि महू- सनावद लाइन के शुरू होने के बाद ट्रेनों का संचालन बढ़ेगा, इसलिए राऊ-महू के बीच दोहरीकरण किया जा रहा है। यह कार्य पूरे होने पर इंदौर आने वाली ट्रेनों को महू तक बढ़ाया जा सकेगा। महू-राऊ के बीच दोहरीकरण का कार्य करीब 52 करोड़ रुपये में पूरा होगा। राऊ-महू रेल लाइन दोहरीकरण का काम 2019 में शुरू हुआ था।

कोरोना के कारण इस प्रोजेक्ट को रोक दिया गया। दोबारा इस प्रोजेक्ट का काम 2021 के अंतिम दिनों में शुरू हुआ। इस साल दिसंबर तक दोहरीकरण का काम पूरा करने का लक्ष्य लेकर कार्य किया जा रहा है। राऊ से महू के बीच में हरनियाखेड़ी में स्टेशन बनाया जा रहा है। नया स्टेशन भवन बनाकर दो प्लेटफार्म बनाए बनाए जा रहे हैं।

कई वार्डों में फिर सफाई व्यवस्था बिगडी

इंदौर। सफाई व्यवस्था एक बार फिर त्योहारों के चलते बिगड़ने लगी है। कई वार्डों में हल्ला गाड़ियां समय पर नहीं पहुंच पा रही है, जिसके चलते शिकायतें बढ़ने लगी है, कान्ह नदी और अन्य नालों की साफ-सफाई का अभियान भी बंद पड़ा है। पिछले दिनों सफाई व्यवस्था को लेकर निगमायुक्त हर्षिका सिंह ने अफसरों को फिर से अभियान चलाने के निर्देश दिए थे। अधिकांश अधिकारियों की ड्यूटी चुनाव में लगने के कारण मानिटरिंग का मामला गड़बड़ाने लगा है और इसी के चलते वार्डों में हल्ला गाड़ियां समय पर नहीं पहुंच पा रही हैं। सुबह 7 से 8 बजे के बीच पहुंचने वाली हल्ला गाड़ियां 10-11 बजे तक पहुंच रही हैं।

अंदरूनी कलह से तार-तार हुई कांग्रेस गुटों और गिरोहों में बंटी

दूसरी सूची के साथ ही बंद कमरों से बाहर आई कांग्रेस की कपड़ा फाड़ राजनीति

अपना ही गोल मारकर आउट हुई कांग्रेस, चुनाव में दो अंकों तक भी नहीं पहुंचेगी - विश्वास सारंग

टिकटों की बोली आम बात, इस बार बोली कौन लगाएगा इसके लिए भी लगी बोलियां

दिग्विजय और कमलनाथ में से किस का बेटा चलाएगा कांग्रेस, उजागर हुई रस्साकशी

भोपाल। कांग्रेस की दूसरी सूची जारी होने के बाद पार्टी की अंदरूनी खींचतान सड़क पर आ गई है। पार्टी की जो कपड़ा फाड़ राजनीति बंद कमरों के अंदर चल रही थी, वो अब सार्वजनिक हो गई है। वहीं, गुटों और गिरोहों में बंटी कांग्रेस में अपने-अपने साम्राज्य, अपने छत्रपों और अपने-अपने गुर्गों को स्थापित करने की रस्साकशी उजागर हो गई है। दोनों सूचियों से उपजे असंतोष से कांग्रेस पार्टी तार-तार हो गई है और चुनाव में वह दो अंकों तक भी नहीं पहुंच सकेगी। यह बात प्रदेश सरकार के मंत्री विश्वास सारंग ने शुक्रवार को प्रदेश मीडिया सेंटर में पत्रकार-वार्ता को संबोधित करते हुए कही।

बोली लगाने के लिए भी लगने लगी बोलियां

प्रदेश सरकार के मंत्री सारंग ने कहा कि अभी कुछ समय तक प्रदेश कांग्रेस के जो दो नेता गलबहियां डाले घूम रहे थे और प्रदेश में सरकार बनाने की डींगें हांक रहे थे, उनका असली मंतव्य कांग्रेस की दोनों सूचियों से सामने आ गया है। सारंग ने कहा कि कांग्रेस की पहली सूची आने के बाद कमलनाथ ने कपड़े फाड़ने की बात की, तो दिग्विजय सिंह ने मीडिया के सामने उनकी गलतियों को उजागर किया। लेकिन दूसरी सूची आने के बाद तो पार्टी में विरोध और असंतोष इतना तीव्र हो गया है कि उम्मीदवारों की सूची से ज्यादा लंबी इस सूची के विरोध में इस्तीफा देने वालों की सूची हो गई है। सारंग ने कहा कि गुटों और गिरोहों में बंटी कांग्रेस में टिकटों के लिए बोलियां पहले भी लगती रही हैं। लेकिन इस बार तो सारे पुराने रिकॉर्ड टूट गए। इस बार यह तय करने के लिए भी बोलियां लगी कि बोली कौन लगाएगा। दिग्विजय सिंह लगाएंगे, कमलनाथ लगाएंगे, नकुलनाथ लगाएंगे या जयवर्धन लगाएंगे।

परिवारवाद की पद्धति प्रदेश संगठन में आई

श्री सारंग ने कहा कि कांग्रेस में शुरू से परिवारवाद की संस्कृति और पद्धति रही है और शीर्ष नेतृत्व की इस पद्धति को अब प्रदेश संगठन ने भी अपना लिया है। कांग्रेस में परिवारवाद को पं. नेहरू ने स्थापित किया था और आज नेहरू-गांधी परिवार अपने बेटे और बेटी को स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रहा है। मध्यप्रदेश में दिग्विजय सिंह तथा कमलनाथ भी अपने बेटों को सेट करने में लगे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की जो दो सूचियां जारी हुई हैं, उनमें परिवारवाद को राजनीति में स्थापित करने की लालसा ही नजर आती है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में परिवारवाद को स्थापित करने के लिए दिग्विजय सिंह और कमनलाथ के बीच अंदर ही अंदर खींचतान चल रही है। दोनों सूचियों से यह स्पष्ट हो चुका है कि इन दोनों नेताओं के बीच इस बात को लेकर रस्साकशी जारी है कि प्रदेश कांग्रेस को कौन चलाएगा? नकुलनाथ या जयवर्धन सिंह?

अपना ही गोल मारकर आउट हुई कांग्रेस

कैबिनेट मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि सूची जारी होने से पहले तक कांग्रेस पार्टी अपने कार्यकर्ताओं से वादे करती रही। कमलनाथ और दिग्विजय सिंह यह दावे करते रहे कि टिकट उसी को मिलेगी, जिसके बारे में सर्वे रिपोर्ट पॉजीटिव होगी। लेकिन जब सूचियां जारी हुई तो सर्वे पीछे छूट गया और इन सूचियों ने बता दिया कि कांग्रेस में सर्वे सर्वा कौन है। श्री सारंग ने कहा कि इन सूचियों के जारी होने के बाद कांग्रेसियों के जो विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं, उनसे कांग्रेस की गुटबाजी ही प्रकट होती है। लेकिन इन सूचियों के जारी होने के बाद मची खींचतान ने कांग्रेस पार्टी को तार-तार कर दिया है और अब चुनाव में कांग्रेस दो अंकों तक सिमट कर रह जाएगी।

ग्रामीण बोले- 15 सालों से विधायक दिखे नहीं

चुनाव बहिष्कार का ऐलानः सड़क और बिजली को तरस रहे एमपी के ये तीन गांव

भोपाल। भोजपुर विधानसभा के कुछ ऐसे गांव हैं जो सालों से बिजली और सड़क की बाट जोह रहे हैं और अब उनके सब्र का पैमाना छलक चुका है। ऐसे में ग्रामीणों ने विधानसभा चुनाव में मतदान करने का बहिष्कार किये जाने की घोषणा कर सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है।

दरअसल भोजपुर विधानसभा अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत रतनपुर के तीन गांव डूडादेह, डगडागा, पंजझिरपा सालों बाद भी बिजली और सड़क के लिए तरस रहे हैं। दिन ढलते ही सड़कों पर अंधेरा छा जाता है। आस-पास के कुछ घरों में सोलर लाइट लगी होने से किसी तरह उनका गुजर-बसर हो जाता है। अब इन तीन गांवों के 570 मतदाताओं ने चुनाव बहिष्कार का ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि 15 सालों से विधायक दिखे ही नहीं। ग्रामीणों ने ईएमएस से बात करते हुए कहा कि हम गांव वालों को केवल अपने मत का प्रयोग करने का अधिकार है। इसलिए गांव में आज तक ना बिजली पहुंच पाई है ना ही सड़क। ग्रामीणों ने बताया कि कई लोगों का यहां जन्म भी हुआ और मृत्यु भी हो गई। लेकिन आज तक हमने यहां ना ही बिजली देखी और ना ही सड़क। यदि यहां कोई बीमार पड़ जाता है तो उसे बैलगाड़ी में ले जाया जाता है। रास्ता न होने के कारण बारिश में कई बार मरीजों की रास्ते में ही मौत हो जाती है। गर्भवती महिलाओं को भी अस्पताल तक नहीं ले जा सकते जिससे कई बार गर्भवती महिलाओं की या नवजात की मौतें भी हुई है।

ग्रामीणों का गुजर बस कुछ घरों में लगी सोलर लाइट के सहारे हो रहा है। दो गांव में कक्षा 5 तक स्कूल है और एक गांव में कक्षा 8 तक, इस पढ़ाई के बाद बच्चों की शिक्षा भी बंद हो जाती है। इसकी वजह है गांव में सड़क का न होना। ग्रामीणों को अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में आवश्यक खाद्य सामग्रियों और संसाधनों के लिए कई किलोमीटर पैदल चलकर शहर पहुंचना पड़ता है। बारिश के मौसम में तो ग्रामीण गांव में ही कैद हो जाते हैं। ग्रामीणों का कहना है कि यहां सुरेंद्र पटवा 15 वर्षों से विधायक हैं और मंत्री भी रहे, लेकिन आज तक वो गांव में नहीं आए और न ही हमने उन्हें देखा। उन्होंने कभी इन गांवों की तरफ देखा ही नहीं। इसलिए इस बार ग्रामीणों ने मन बनाया है कि वह चुनाव का बहिष्कार करेंगे और अपने मत का प्रयोग नहीं करेंगे। वहीं कुछ लोगों ने कहा कि जो हमें बिजली और सड़क लाकर देगा उसके बाद हम उसको वोट देंगे।

पुलिस स्थापना दिवस पर शिवराज ने शहीदों को किया नमन

भोपाल। आजाद हिंद फौज के स्थापना दिवस को वीरता और बिलदान की अमर धरोहर बताते हुए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने देश वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर पुलिस स्मृति दिवस पर शहदी वीर जवानों को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

मुख्यमंत्री शिवराज ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर शनिवार सुबह पोस्ट करते हुए लिखा कि देशभक्ति और जनसेवा के पवित्र ध्येय की प्राप्ति हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले वीर जवानों के चरणों में पुलिस स्मृति दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। आपकी सेवा भावना, समर्पण, कर्मशीलता और असाधारण कर्तव्यनिष्ठा का पुण्य आलोक भावी पीढ़ियों को राष्ट्र सेवा हेतु प्रेरित करता रहेगा। उन्होंने एक अन्य पोस्ट में लिखा है कि वीरता और बलिदान की अमर धरोहर,आजाद हिन्द फौज के स्थापना दिवस पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं। राष्ट्रीय स्वतंत्रता के इस महत्वपूर्ण क्षण के अवसर पर सभी राष्ट्र नायकों तथा वीर सपूतों को नमन करता हूँ।

15 अक्टूबर से सदस्यता अभियान प्रारंभ

घोषित समर्थन मूल्य धोखाधड़ी-किसानसभा

सी-2 लागत का डेढ़ गुना समर्थन मूल्य दें केंद्र सरकार साथ ही पूरी फसल की खरीदी भी करें

भोपाल। अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध मध्यप्रदेश किसान सभा ने केंद्र सरकार द्वारा कल रबी फसलों के लिए घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य को किसान समुदाय के साथ धोखाधड़ी बताया है। किसान सभा ने कहा है कि घोषित समर्थन मूल्य किसानों के लिए लाभकारी नहीं है और उन्हें ऋणग्रस्तता में ढकेलने का ही काम करेगा। एक बयान में मध्यप्रदेश किसान सभा के अध्यक्ष अशोक तिवारी, महासचिव अखिलेश यादव ने कहा है कि केंद्र सरकार द्वारा घोषित समर्थन मूल्य ए-2 लागत पर आधारित है, न कि सी-2 लागत पर और भाजपा का वर्ष 2014 का सी-2 लागत का डेढ़ गुना समर्थन मूल्य देने वादा चुनावी जुमला बनकर रह गया है।

मोदी सरकार द्वारा घोषित समर्थन मूल्य से गेहूं उत्पादक किसानों को 203 रूपये प्रति क्विंटल, सरसो किसानों को 452 रूपये, जौ उत्पादकों को 571 रूपये, मसूर किसानों को 910 रूपये, चना किसानों को 1381 रूपये और सोयाबीन उत्पादक किसानों को 2321 रूपये प्रति क्विंटल का नुकसान होने जा रहा है। स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों के अनुसार न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित न करने के कारण किसानों को हो रहे नुकसान के संबंध में देखें तालिका । किसानों को हो रहे नुकसान की भरपाई करने के लिए राज्य सरकार द्वारा दिए जा रहे बोनस पर प्रतिबंध लगाने की भी उन्होंने आलोचना की है।

किसान सभा ने कहा है कि समर्थन मूल्य में कथित वृद्धि के दावे की पोल इसी तथ्य से खुल जाती है कि कृषि मूल्य और लागत निर्धारण आयोग के अनुसार, फसलों की लागत में 9त्र से अधिक की वृद्धि हुई है, जबकि समर्थन मूल्य में वृद्धि केवल 2त्र से 7त्र के बीच ही है।

यह भी उल्लेखनीय तथ्य है कि कृषि लागत के संबंध में आयोग का अनुमान हमेशा विभिन्न राज्यों के लागत अनुमान के औसत से काफी नीचे रहता है। इस प्रकार, बढ़ती लागत के साथ घोषित अनुचित समर्थन मूल्य किसानों की आय को दोगुना करने के बजाए उन्हें कर्ज के दलदल में ढकेलने का ही काम कर रहा है।

मध्यप्रदेश किसान सभा ने मांग की है कि भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार एमएसपी को संशोधित करे और इसे सी-2 लागत का डेढ़ गुना देने के फॉर्मूले के अनुसार बढ़ाए और सुनिश्चित खरीद का भी आश्वासन दे। किसान सभा ने अपनी सभी इकाइयों से नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार द्वारा किसानों के साथ किए गए विश्वासघात के विरोध में खड़े होने और उनके फर्जी दावों को उजागर करने का अभियान चलाने तथा आगामी विधानसभा और लोकसभा चुनावों में भाजपा की हार सुनिश्चित करने का आह्वान किया है ।

मुश्किल में फंसे विजयवर्गीय

चुनाव आयोग के एक्शन से घिरते नजर आ रहे हैं

एक संस्था की शिकायत पर चुनाव आयोग ने रिपोर्ट तलब की

भोपाल। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव एवं इंदौर विधानसभा क्रमांक-एक भाजपा प्रत्याशी कैलाश विजयवर्गीय 51 हजार रुपए इनाम देने का लालच देने के मामले में मुसीबत में फंसते नजर आ रहे हैं। कैलाश के इस भाषण मामले में केंद्रीय चुनाव आयोग ने राज्य निर्वाचन आयोग से रिपोर्ट तलब की थी, जिसे चुनाव आयोग को भेज दिया गया है। हम बता दें कि बड़बोले भाजपा प्रत्याशी कैलाश विजयवर्गीय ने अपने विधानसभा क्षेत्र में आयोजित वार्ड सम्मेलन में ऐलान कर दिया था कि, जिस बूथ पर कांग्रेस को एक भी वोट नहीं मिलेगा, मैं उस अध्यक्ष अध्यक्ष को 51 हजार रुपए का का नकद इनाम दूंगा।

नागरिक अधिकारों के लिए काम करने वाली संस्था सिटीजन फॉर जस्टिस एंड पीस ने भाजपा प्रत्याशी कैलाश विजयवर्गीय के इस वोटर्स को लालच देने संबंधी बयान को लेकर चुनाव आयोग में तमाम साक्ष्यों के साथ शिकायत की थी। अपनी शिकायत में संस्था ने चुनाव संबंधी नियमों का हवाला देकर चुनाव आयोग को शिकायत की थी कि भाजपा प्रत्याशी कैलाश विजयवर्गी का भाषण मतदाताओं को लालच देने और लुभावने वाला है। उनका भाषण चुनाव आचार संहिता के जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 123 का उल्लंघन है। इसके लिए कैलाश विजयवर्गीय पर सख्त कार्रवाई होना चाहिए। इसके साथ संस्था ने शिकायत में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और मप्र भाजपा के अध्यक्ष को इस संबंध नोटिस देने की मांग चुनाव आयोग से की थी।

जानकारी के अनुसार इसके बाद केंद्रीय चुनाव आयोग ने इस मामले में मप्र राज्य चुनाव निर्वाचन आयोग से कुछ बिंदुओं पर रिपोर्ट मांगी थी। जिसमें ने राज्य निर्वाचन आयोग ने चुनाव आयोग को भेज दिया है। हालांकि इस मामले में चुनाव आयोग क्या फैसला लेता है यह तो बाद में ही पता चलेगा। लेकिन चुनाव आयोग के एक्शन से कैलाश विजयवर्गीय मुश्किलों में घिरते नजर आ रहे हैं।

सरकारी स्कूलों में 98,562 शिक्षकों के पद खाली-डॉ. रागिनी नायक

भोपाल। प्रदेश में शिक्षा की बदहाली के आरोप लगाते हुए मप्र कांग्रेस की प्रवक्ता डा. रागिनी नायक ने कहा कि मध्य प्रदेश में भाजपा सरकार के 18 वर्ष के कार्यकाल में शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह से खराब हो चुकी है। राज्य सरकार द्वारा शिक्षा व्यवस्था पर न तो ध्यान दिया गया और न ही संसाधन उपलब्ध कराए गए। प्रदेश के सैकडों सरकारी स्कूलों में शिक्षकों के हजारों पद रिक्त हैं तो प्रति लाख युवाओं पर केवल 29 कालेज हैं, जो अन्य राज्यों की तुलना में कम हैं। प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में आयोजित पत्रकारवार्ता में डॉ नायक ने कहा कि सरकारी स्कूलों में 98,562 शिक्षकों के पद खाली हैं। 36,498 स्कूलों में बिजली, 35,491 स्कूलों में पुस्तकालय, 72 प्रतिशत स्कूलों में मेडिकल सुविधा नहीं हैं। यह आंकड़े कांग्रेस के नहीं, बल्कि केंद्र सरकार द्वारा संसद में दिए गए उत्तर के हैं। प्रदेश में पार्टी की सरकार बनने पर पढ़ो-पढ़ाओ योजना में बच्चों को 500 से लेकर 1500 रुपये तक प्रतिमाह आर्थिक सहायता दी जाएगी। छात्रवृति के भुगतान का अधिकार अधिनियम लागू करेंगे, ताकि कोई गड़बड़ी न हो। अंग्रेजी माध्यम के राज्य नवोदय विद्यालय शुरू होंगे। उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जब ग्वालियर के सिंधिया स्कूल आएंगे तो हम उनसे यह प्रश्न पूछेंगे। रागिनी ने कहा प्रदेश में प्रति लाख युवा पर केवल 29 शासकीय कालेज हैं, जबकि, तमिलनाडु में यह संख्या 40 तो कर्नाटक में 62 है। वहीं, कांग्रेस ने शिक्षा का अधिकार लागू किया।

मप्र में परिवारवाद में फंसी पार्टियां

मप्र में परिवारवाद का भरपूर पोषण, राज्य में सभी बड़े दल पालते-पोसते हैं परिवारवाद को

भोपाल। मप्र की सियासत भी गजब है। यहां सभी दलों के नेता परिवारवाद के खिलाफ तो जमकर बोलते हैं लेकिन जमीनी हकीकत ये है कि राज्य में सभी बड़े दल परिवारवाद को पालते-पोसते हैं। भाजपा की चार और कांग्रेस की लिस्ट सामने आई है। जिसमें कुछ ऐसा ही दिखता है। कांग्रेस भी दावा करती है कि उसकी पार्टी में कम और भाजपा में ज्यादा परिवारवाद है। भाजपा ने अपने प्रत्याशियों की चार लिस्ट जारी की है जिसमें परिवारवाद की झलक साफ देखने को मिल रही है। इसमें कई दिग्गज नेताओं के परिवार जनों को पार्टी ने टिकट दिया गया है। कांग्रेस की पहली सूची में भी परिवारवाद देखने को मिला है।

मप्र की सियासत में परिवारवाद सीधे या फिर कहें परोक्ष रूप से हावी है. 230 विधानसभा सीटों में से दर्जनों पर राजनीति, परिवारों के ईद-गिर्द घूमती है। नए चेहरों को अपना वजूद कायम करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। देखा जाए तो भाजपा अक्सर भाई-भतीजावाद को लेकर मुखर रहती है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हाल ही में जब कार्यकर्ता महाकुम्भ में राजधानी भोपाल पहुंचे थे तब उन्होंने अपने भाषण में परिवारवाद और कांग्रेस पर जमकर हमला किया था।लेकिन हकीकत में मध्य प्रदेश में स्थिति बिलकुल उलट नजर आ रही है। आगामी विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी ने 136 उमीदवार घोषित किए हैं। इनमें कई राजनितिक सफर वाले परिवार के लोगों को भी टिकट दिए गया है। जिसमें पूर्व मुख्यमंत्रियों के परिवार वाले भी शामिल हैं।

भाजपा में इस बार परिवारवाद- मप्र विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी ने 136 उमीदवार घोषित किए हैं।

इनमें कई राजनैतिक सफर वाले परिवार के लोगों को भी टिकट सफर वाले परिवार के लोगों को भी टिकट दिए गए हैं। इसमें पूर्व मुख्यमंत्रियों के परिवार वाले भी शामिल हैं। भाजपा से टिकट पाने में नेता पुत्री और नेता पत्नी भी पीछे नहीं हैं। पेटलाबाद से दिलीप भूरिया की बेटी निर्मला भूरिया को भाजपा ने अपना प्रत्याशी बनाया है। साथ ही भाजपा ने 5 नेता पत्नी को भी टिकट दिया है। पार्टी ने दिवंगत पूर्व मंत्री लक्ष्मण गौर की पत्नी मालिनी गौर को इंदौर से प्रत्याशी बनाया है। इंदौर से इस बार आकाश विजयवर्गीय का टिकट होल्ड करके उनके पिता कैलाश विजयवर्गीय को दे दिया गया है। वहीं भाजपा ने पूर्व मुख्यमंत्री गोविंद नारायण सिंह के बेटे ध्रुव नारायण सिंह, पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती के भतीजे राहुल लोधी, पूर्व मुख्यमंत्री वीरेंद्र सिंह सकलेचा के पुत्र ओम प्रकाश सकलेचा, पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर की बहू कृष्णा गौर पूर्व विधायक प्रतिभा सिंह के बेटे नीरज सिंह को टिकट देकर प्रत्याशी बनाया गया है। इसके बावजूद भाजपा नेता परिवारवाद को लेकर पार्टी गाइडलाइन की बात को ही दोहराते हैं। इस संदर्भ में प्रदेश अध्यक्ष बीडी शर्मा कहते हैं कि जो जमीन पर काम करते हैं वे ही समाज का नेतृत्व करेंगे। यहां किसी का बेटा होना योग्यता नहीं है, लेकिन किसी का बेटा कार्यकर्ता है और वो काम कर रहा है तो वह उसका अपराध नहीं है। शर्मा के इस बयान के बाद राजनितिक हलचल काफी तेज हो गयी है, क्योंकि भाजपा के कई दिग्गज नेताओं के युवराज अभी भी लाइन में खड़े होकर अपनी बारी आने का इंतजार कर रहे हैं। हालांकि इसके बीच कांग्रेस का कहना है की भाजपा परिवारवाद में ज्यादा लिप्त है और कांग्रेस के नेताओं का जनता से डायरेक्ट कनेक्शन है। कांग्रेस प्रवक्ता आनंद जाट ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा में गुटबाजी और परिवारवाद चरम पर है। यहां सब बस आपस में लड़ रहे हैं और पार्टी में किसी का कोई भला नहीं होने वाला। जनता भाजपा से परेशान हो चुकी है और आने वाले समय में वो कांग्रेस पार्टी पर ही भरोसा जताएगी।

वंशवाद की भेंट चढ़ी कांग्रेस प्रत्याशियों की सूची- कांग्रेस ने दिग्विजय सिंह के बेटे जयवर्धन सिंह को राघौगढ़, उनके भाई लक्ष्मण सिंह को चाचौड़ा, उनके रिश्तेदार प्रियव्रत सिंह को खिलचीपुर से, समधी घनश्याम सिंह को सेवड़ा, भांजे सिंधु विक्रम सिंह को शमशाबाद और भांजा-दामाद अजय सिंह को चुरहट से टिकट दिया गया है। इसी तरह प्रेमचंद गुड्डू की बेटी, अरूण यादव के भाई, अजय सिंह के मामा राजेन्द्र कुमार सिंह को टिकट दिया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा कहते हैं कि कांग्रेस जिस परिवारवाद के लिए पहचानी जाती है, उस परिवारवाद की छाया भी इस सूची में साफ दिखाई देती है। इससे यह स्पष्ट है कि कांग्रेस प्रत्याशियों की सूची वंशवाद की भेंट चढ़ गई है।

भारतीय संस्कृति और परंपरा का प्रतीक है रामलीला
आसिफ शेख और रोहिताश्व गौड़

भाभीजी घर पर हैं' के कलाकार आसिफ शेख और रोहिताश्व गौड़ अपने किरदारों विभूति नारायण मिश्रा और मनमोहन तिवारी के लिये काफी मशहूर हैं। इन्होंने हाल ही में दिल्ली के लाल किला में आयोजित लव कुश रामलीला में भाग लिया। इस कार्यक्रम में किरदार निभाना अपने आप में एक अलग अनुभूति होती है।

प्रश्नः आपको राजधानी में रामलीला का में कितना आनंद आया, उत्सव का माहौल कैसा है?

उत्तरः-आसिफ शेख ने कहा कि मेरे दिल में दिल्ली की रामलीला के लिये एक खास स्थान है। मैं जब भी दशहरे का जश्न मनाने के लिये दिल्ली आता हूं, इस त्योहार और यहां के बेमिसाल दर्शकों के लिये मेरा लगाव और बढ़ जाता है। इसमें कोई शक नहीं कि ये रामलीलायें बेहद खास होती हैं, क्योंकि यह किसी भी कलाकार की कला एवं प्रतिभा का सबसे असाधारण प्रदर्शन होता है। मैं रंगमंचीय परफॉर्मेंस का हमेशा से ही एक बड़ा प्रशंसक रहा हूं। हालांकि, मुझे कभी भी रामलीला में भाग लेने का मौका नहीं मिला, लेकिन मैं अपने दोस्तों के साथ लाल किला आया करता था और हम सबसे आगे की सीट लेने की कोशिश करते थे ताकि कलाकारों की परफॉर्मेंस का एकदम नजदीक से आनंद उठा पायें। अब मुझे मंच पर इसे लाइव देखने का मौका मिलता है और लोग हौसलाअफजाई करते रहते हैं जिसे देखकर बहुत अच्छा लगता है।

प्रश्नः दिल्ली के उस स्ट्रीट फूड के बारे में बताएं जो आप मुंबई में भूल गए थे?

उत्तरः- दिल्ली विभिन्न संस्कृतियों का मिश्रण है जो विभिन्न प्रकार के व्यंजनों के लिए मशहूर है। मुंबई में मुझे दिल्ली का खाना बहुत याद आता है। जब भी मैं शहर आत हूं, तो स्वादिष्ट भोजन का लुत्फ उठाने का ध्यान रखता हूं। छोले भठूरे तो जरूर खाता हूं। जामा मस्जिद में करीम, गुलफाम कश्मीरी वाजवान, और निजामुद्दीन दरगाह में गालिब कबाब कॉर्नर, करोल बाग में रोशन दी कुल्फी, बंगाली मार्केट में पानी-पुरी और सीआर पार्क में मटन चॉप्स। मैं खाने का बहुत शौकीन हूं और अक्सर खाना बनाने का शौक रखता हूं।

प्रश्नः आपने राम लीला और दर्शकों के साथ बातचीत का कितना आनंद लिया?

उत्तरः-रोहिताश्व गौड़ कहा कि रामलीला देखकर मुझे अपने कॉलेज के दिनों की याद आ गई, जब मैं चंडीगढ़ के पास कालका में रामलीला में भाग लेने जाया करता था। मुझे अक्सर अंगद और

एक्सक्लूजीव पंजाब केसरी

रिपोर्टः उमेश महतों

विभीषण का रोल निभाने के लिये दिया जाता था, लेकिन मन ही मन मैं राम की भूमिका निभाया करता था। दिल्ली में आसिफ शेख, जोकि हमारे शो में मेरे पड़ोसी बने हैं, के साथ रामलीला देखने के लिये दूसरी बार आना बेहद यादगार है। इस भव्य समारोह को देखना हमारे लिये सौभाग्य की बात है, जिसमें हजारों लोग आते हैं और वास्तव में यह एक आत्मिक अनुभव है।

प्रश्नः इस शहर से जुड़ी अपनी कोई सुनहरी जो यादें साझा करें?

उत्तरः-अपने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के दिनों में मैं दिल्ली में ही रहता था, लेकिन उस समय हमारे व्यस्त शेड्यूल की वजह से मुझे इस शहर को बहुत ज्यादा जानने का मौका नहीं मिल पाया।

प्रश्नः ओटीटी के कारण टीवी की ऑडियंस कम हुई है ? इसको आप कैसे देखते है?

उत्तरः-ओटीटी पर अभी सेंसरशिप नहीं है तो बहुत सी चीजें खुले में हैं। उसमें गालियां भी चल रही हैं और कुछ ऐसे सींस भी, जो हम टीवी में नहीं दिखा सकते। टीवी की अपनी मर्यादा है। ओटीटी के खुलेपन का असर ये हो रहा है कि अचानक टीवी की ऑडियंस कम हो गई है। लोगों से जब पूछो कि शो देखते हैं तो कहते हैं, हां मोबाइल पर। दर्शक कहीं-ना-कहीं वो चीजें देखना चाहते हैं, जो दिखाया जा रहा है। जिस वेब सीरीज में जरूरत है, वहां तो ठीक है लेकिन कुछ लोग टीआरपी के लिए गालियां और गंदे सीन डाल रहे हैं। ये गलत है, इससे बुरा असर पड़ रहा है।

प्रश्नः आपको नहीं लगता कि टीवी के अच्छे कंटैंट की जरूरत हैं?

उत्तरः-हमारा यूथ आपको आउट डेटेड बताएगा। आज का युवा प्रेमचंद नहीं पढ़ना चाहता। अब ये गलत है या सही, ये नहीं पता लेकिन मेरे हिसाब से सेंसरशिप होनी चाहिए, नहीं तो बहुत सी चीजें हाथ से निकल जाएंगी।

जो बीत गया सो बीत गया, आने वाले साल से यही उम्मीद है कि टीवी के हालात सुधरें। इसका ग्रो करना जरूरी है क्योंकि आज भी हम इसके माध्यम से घर-घर पहुंच रहे हैं। खासकर छोटे-छोटे शहरों में। आप देखे तो लोगों को पता ही नहीं है कि ओटीटी क्या है। ओटीटी से ज्यादा आज भी लोग टीवी देखना पसंद करते हैं।

कन्नड़ ब्यूटी ने साउथ की ब्लॉकबास्टर मूवी सीरीज में रखा कदम

कम ही लोग होते हैं जिन्हें डेब्यू मूवी में सफलता मिलती है। उस पर भी ये सफलता ब्लॉकबस्टर हो। ऐसा काफी कम होता है। इस खास रिपोर्ट में हम कन्नड़ फिल्म अदाकारा श्रीनिधि शेट्टी के बारे में बताने जा रहे हैं। जिन्होंने अपने करियर की शुरुआत ही एक नहीं दो-दो ब्लॉकबस्टर मूवी से की। केजीएफ फेम अदाकारा श्रीनिधि शेट्टी ने एक साथ ही दो ब्लॉकबस्टर मूवी दर्शकों को दीं। ये दोनों ही फिल्में केजीएफ सीरीज की थीं। जिसके साथ अदाकारा ने अपना सिक्का इंडस्ट्री में जमा लिया। यही नहीं, एक्ट्रेस श्रीनिधि शेट्टी ने इसके बाद अपनी तीसरी मूवी से भी दर्शकों को इंप्रेस कर डाला था। केजीएफ की रीना उर्फ श्रीनिधि शेट्टी आज अपना 31वां बर्थडे मना रही हैं। अदाकारा ने कम ही वक्त में फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखकर हर किसी को दीवाना कर दिया है। अदाकारा बनने से पहले कन्नड़ ब्यूटी श्रीनिधि शेट्टी मॉडल रह चुकी हैं। अदाकारा ने मिस सुपरनेशनल इंडिया 2016 का ब्यूटी पैजेंट जीता था। जिसके बाद उनकी एंट्री फिल्म वर्ल्ड में हुई।

श्रीनिधि शेट्टी की दूसरी ब्लॉकबस्टर मूवी

केजीएफ की बंपर सक्सेस के बाद मेकर्स ने फिल्म के दूसरे पार्ट में भी श्रीनिधि शेट्टी नजर आईं। जो रॉकी भाई की लव इंट्रेस्ट के रोल में थीं। इस किरदार में श्रीनिधि शेट्टी ने हर किसी को दीवाना बना दिया। बता दें कि महज 80 करोड़ रुपये में बनी अदाकारा श्रीनिधि शेट्टी की केजीएफ 1 साल 2018 में सिनेमाघर पहुंची थी। इस मूवी ने रिलीज होते ही वर्ल्डवाइड स्तर पर 240 करोड़ रुपये की कमाई की थी।

काम से ज्यादा विवादों में रही किम कार्दशियन

अमेरिकी रियलिटी टीवी स्टार किम कार्दशियन अक्सर किसी ना किसी विवाद के चलते चर्चा में छाई रहती हैं। वह टीवी स्टार हैं, अमेरिकन मॉडल हैं, बिजनेस वूमेन भी हैं और सोशलाइट भी.. ग्लैमर की दुनिया से उनका ताल्लुक बचपन से ही रहा, क्योंकि उनके पिता रॉबर्ट कार्दशियन अमेरिका के बड़े वकीलों में शुमार रहे, जबकि मां क्रिस जेनर जानी-मानी सेलिब्रिटी हैं. बात हो रही है किम कार्दशियन की, जिन्होंने 21 अक्टूबर 1980 के दिन इस दुनिया में पहला कदम रखा था। आज हम आपको उनके बर्थडे स्पेशल जानेंगे किम कार्दशियन की जिंदगी के चंद किस्सों और विवादों बारे में-

सेलिब्रिटी परिवार से ताल्लुक रखती हैं किम

पिता जाने-माने वकील और मां दिग्गज सेलिब्रिटी। कुल मिलाकर कहा जाए तो किम कार्दशियन ने ग्लैमर की दुनिया बचपन से ही देखी, जिसका

नतीजा यह हुआ कि उन्होंने भी इस दुनिया की ओर बेहद आसानी से अपने कदम बढ़ा दिए। आलम यह है कि उनके परिवार को अमेरिका के सबसे ताकतवर परिवारों में एक माना जाता है, लेकिन इस परिवार से ताल्लुक रखने वाली किम कार्दशियन अपने काम के साथ-साथ विवादों को लेकर भी सुर्खियों में रहीं।

फोटोशूट को लेकर बवाल

किम कार्दशियन अपने बिंदास फोटोशूट को लेकर भी सुर्खियों में रह चुके हैं। दरअसल, उन्होंने एक फोटोशूट ऐसा कराया था, जिसमें उन्होंने अपने हिप पर शैंपेन का गिलास रखा था। एक मैग्जीन के कवर पर छपी इस तस्वीर ने काफी ज्यादा सुर्खियां बटोरी थीं. वहीं, प्लेबॉय मैग्जीन के लिए तो उन्होंने इतना ज्यादा बिंदास फोटोशूट करा लिया कि उनकी काफी ज्यादा आलोचना भी हुई थी।

तीन-तीन शादी कर चुकीं किम कार्दशियन

विवादों के साथ-साथ निजी जिंदगी को लेकर भी किम कार्दशियन सुर्खियों में रह चुकी हैं। उन्होंने अब तक तीन-तीन बार शादी रचाई है।

सबसे पहले उन्होंने डैमन थॉमस के साथ साल 2000 के दौरान रिश्ता जोड़ा, लेकिन 2004 में उनका तलाक हो गया।

इसके बाद साल 2011 में किम की जिंदगी में क्रिस हम्फ्रीज की एंट्री हुई, लेकिन दो साल बाद ही यानी 2013 में यह रिश्ता भी खत्म हो गया। इसके बाद किम ने 2014 में कायने वेस्ट को अपना हमसफर बनाया, लेकिन 2022 में यह रिश्ता भी टूट गया।

ये हैं दुनिया के सबसे मुश्किल कोर्स

अगर आप लगातार पढ़ाई-लिखाई को समय देते हैं तो कुछ भी कठिन नहीं होता है, क्योंकि जिस सब्जेक्ट को जितना समय दिया जाए, वह उतना ही आसान होता जाता है, लेकिन कुछ विषय बहुत ही मुश्किल होते हैं, जिनकी पढ़ाई करने वाले स्टूडेंट्स को दूसरे सब्जेक्ट्स के मुकाबले ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। आज हम आपको एक ऐसे ही सब्जेक्ट के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसकी पढ़ाई दुनिया में सबसे टफ मानी जाती है।

हर कोई आसान से आसान कोर्स करके अच्छी जॉब पाना चाहता है और आमतौर पर हमारे देश में ऐसा ही होता है, लेकिन कुछ ऐसे कोर्स भी हैं बेहद मुश्किल कोर्स में से गिना जाता है। कुछ समय पहले ऑक्सफोर्ड रॉयल एकेडमी ने दुनिया के 10 सबसे कठिन विषयों की डिग्रियों की रैंकिंग जारी की है। इन मुश्किल सब्जेक्ट्स में से एक कोर्स है एयरोस्पेस इंजीनियरिंग, जिसे पहले नंबर पर रखा गया है।

एयरोस्पेस इंजीनियरिंग

सबसे बड़ा सवाल यह आता है कि इस सबसे मुश्किल कोर्स को कौन करता है और इसे करने के बाद कौन सी नौकरी मिलती है। यह इंजीनियरिंग के मुख्य ब्रांच में से एक है। इसमें एयरक्राफ्ट और स्पेसक्राफ्ट के निर्माण से जुड़ी चीजें पढ़ाई जाती हैं। इस फील्ड की पढ़ाई करने वाले स्टूडेंट्स को सिद्धांतों की गहरी समझ और तकनीकी ज्ञान होना जरूरी है।

मिलता है बेहतरीन सैलरी पैकेज

इसमें सभी विमानों के डिजाइन, निर्माण और परीक्षण की पढ़ाई कराई जाती है। इस तरह की चीजों को पढ़ने में बहुत मेहनत और लगन की जरूरत होती है। इस विषय की पढ़ाई करने वालों युवाओं को डिग्री मिलते ही उनकी लाइफ सेट हो जाती है, क्योंकि शुरुआत में ही लाखो-करोड़ों तक का सैलरी पैकेज मिलता है।

बी.टेक इंजीनियरिंग

एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में बी. टेक विमान और एयरोस्पेस के विकास से संबंधित इंजीनियरिंग के सबसे महत्वपूर्ण भागों में से एक है। एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के एक बड़े हिस्से में मैकेनिकल इंजीनियरिंग शामिल है, जिसमें कंप्यूटर ऑपरेटिंग सिस्टम, संरचना, मैथ्स, फिजिक्स, ड्राफ्टिंग, वैमानिकी जैसे विषयों की एक विस्तृत रेंज शामिल है।

डिमांडिंग कोर्स

इस समय में इस कोर्स की डिमांड तो तगड़ी है, लेकिन इसे करने वाले स्टूडेंट्स की संख्या काफी कम है। ऐसे में जो स्टूडेंट्स कुछ हटकर करना चाहते हैं तो इस कोर्स में दाखिला लेकर अपना फ्यूचर संवार सकते हैं।

इजराइल के झंडे में छुपा है यहूदियों का इतिहास

आज इजरायल और हमास के युद्ध के चलते पूरी दुनिया इजरायल और यहूदियों के बारे में जानना चाहती है। लोग इनसे जुड़ी हर चीज के बारे में इंटरनेट पर सर्च कर रहे हैं। कोई यहूदी धर्म के बारे में जानना चाहता है, तो कोई ये जानना चाहता है कि इनके यहां शादी कैसे होती है। यही वजह है कि आज हम आपको इजरायल के झंडे पर बने उसे नीले सितारे की कहानी बताएंगे जो यहूदियों के लिए बेहद पवित्र है और इससे उनका इतिहास जुड़ा है।

नीले सितारे का राज

आप इजरायल के झंडे में जो नीला सितारा देखते हैं उसे स्टार ऑफ डेविड यानी डेविड का सितारा कहते हैं। इसका प्रयोग यहूदियों ने 14वीं के मध्य से ही अपने झंडे पर करना शुरू कर दिया था। बाद में ये इनका धार्मिक चिन्ह भी बन गया। इसके साथ ही साल 1896 में जब जायोनी आंदोलन की शुरूआत हुई तो इस झंडे को यहां भी अपनाया गया। हालांकि, यहूदियों ने इसे आधिकारिक रूप से इजरायल का झंडा 28 अक्टूबर 1948 को अपनाया।

पढ़ाई के साथ ये हैं जॉब के बेस्ट ऑप्शन

पढ़ाई पर पैरेंट्स की अच्छी-खासी रकम खर्च होने के बाद कई स्टूडेंट्स सोचते हैं कि अब अपने जेब खर्च के लिए माता-पिता से पैसे नहीं मांगने पड़े या फिर थोड़ा-बहुत कमा कर पैरेंट्स का बोझ कुछ कम कर सकें। इसके लिए छात्र-छात्राएं कॉलेज में पढ़ाई के साथ-साथ कुछ पार्ट टाइम जॉब करना प्रेफर करते हैं, जिससे वे अपनी पॉकेट मनी खुद निकाल सके।

हालांकि, कई बार फैमिली में आर्थिक तंगी के चलते भी छात्र-छात्राओं को मजूबरन नौकरी करनी पड़ती है, जिससे वे अपनी फीस भर सकें। फैमिली को सपोर्ट कर सकें। परिस्थितियां कैसी भी हों लेकिन कुछ स्टूडेंट्स पढ़ाई के साथ पार्ट टाइम नौकरी का विकल्प चुनते हैं। अगर आप भी उनमे से एक हैं तो आज हम आपको बताने जा रहे हैं। हम कुछ जॉब ऑप्शन के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको करके आप पैरेंट्स की मदद कर सकेंगे, बल्कि खुद अपने पैरों पर भी खड़े हो सकेंगे। आइए डालते हैं एक नजर।

कंटेंट राइटिंग

अगर आपकी लिखने में रुचि है तो आपके लिए कंटेंट राइटिंग एक अच्छा ऑप्शन हो सकता है। आजकल तमाम मैगजीन, डिजिटल वेबसाइट और अन्य न्यूज पेपर फ्रीलांसर राइटर की डिमांड करते हैं। ऐसे में आप अपने स्टडी टाइम के अनुसार आर्टिकल लिखकर ठीक-ठाक पैसे कमा सकते हैं।

ट्यूशन

ट्यूशन टीचर बनना आपके लिए बेस्ट ऑप्शन साबित हो सकता है। अगर आपकी किसी भी सब्जेक्ट पर अच्छी पकड़ है और आपको लगता है कि इसे बेहतर तरीके से आप किसी को समझा सकते हैं तो आप ट्यूशन टीचर बनकर भी आप अपना खर्चा निकाल सकते हैं। इसके लिए भी सहूलियत यह है कि अपने पढ़ाई से बचे टाइम के बाद आप क्लासेस के लिए वक्त रख सकते हैं, जिससे आपकी पढ़ाई भी डिस्टर्ब न हो।

फोटोग्राफी

अगर आपको पिक्चर क्लिक करने का शौक और हुनर दोनों ही है तो आप फोटोग्राफी से भी अच्छा कमा सकते हैं। कंटेंट राइटर की तरह कई वेबसाइट्स पर आप अपनी फोटोज को सेल कर सकते हैं।

हैंडमेड आइटम

अगर आपके भीतर हुनर हैं तो आप हैंडमेड आइटम बनाकर भी कमा सकते हैं। आपको, जिस आइटम को बनाने में रुचि है आप वो बनाकर सेल कर सकते हैं।

एक्साइज इंस्पेक्टर बनने के लिए पास करनी होगी ये परीक्षा

आजकल हर युवा के अलग-अलग सपने होते हैं। कोई डॉक्टर, इंजीनियर बनना चाहता है तो कोई रेलवे, बैंकिंग आदि क्षेत्रों में नौकरी करना चाहते हैं। वहीं कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो देश में मौजूद विभिन्न फोर्सेज में शामिल होकर देश की सेवा करना चाहते हैं। इसी में से एक पद होता है एक्साइज इंस्पेक्टर, जो केंद्र सरकार के अंतर्गत आता है और काफी पावरफुल पद होता है।

अगर आप एक्साइज इंस्पेक्टर पद पर भर्ती होना चाहते हैं तो आपको इसके लिए सबसे पहले एक परीक्षा पास करनी होती है। आइये जानते हैं।

एसएससी सीजीएल में लेना होता है भाग

एक्साइज इंस्पेक्टर बनने के लिए आपको कंबाइंड ग्रेजुएट लेवल (SSC CGL) एग्जामिनेशन में भाग लेना होगा। सीजीएल एग्जाम का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है और इसको आयोजित करने का जिम्मा स्टाफ सिलेक्शन कमीशन यानी कि एसएससी को दिया गया है।

दो टियर में होता है एग्जाम

एसएससी सीजीएल एग्जाम दो चरणों- टियर-1 और टियर-2 में आयोजित किया जाता है। टियर 1 एग्जाम में 100 प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित होते हैं। टियर 1 में जनरल इंटेलिजेंस एन्ड रीजनिंग, जनरल अवेयरनेस, क्वांटिटेटिव एप्टीट्यूड, इंग्लिश कॉम्प्रिहेंसन विषयों से 25-25 प्रश्न पूछे जाएंगे।

प्रश्न पत्र हल करने के लिए 1 घंटे का समय प्रदान किया जाता है। पेपर 1 सभी उम्मीदवारों के लिए अनिवार्य होता है। जो उम्मीदवार टियर-1 एग्जाम में सफलता प्राप्त करते हैं वे टियर-2 एग्जाम में भाग ले सकते हैं।

कौन ले सकता है इस एग्जाम में भाग

इस एग्जाम में भाग लेने के लिए उम्मीदवारों का मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय/संस्थान से किसी भी स्ट्रीम में ग्रेजुएट होना अनिवार्य है। इसके साथ ही अभ्यर्थी की न्यूनतम आयु 18 वर्ष एवं अधिकतम आयु 30 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। ऊपरी आयु सीमा में आरक्षित वर्ग को नियमानुसार छूट प्रदान की जाती है।

इंदौर-3 में चेहरा गोलू, लेकिन मैदान में 'आकाश'

कार्यकर्ताओं से बोले-विकास और सनातन दो मुद्दों पर करो फोकस

इंदौर। ये कहना है इंदौर-3 से सिटिंग विधायक आकाश विजयवर्गीय का। उनका टिकट काटकर बीजेपी ने यहां से आईडीए उपाध्यक्ष गोलू शुक्ला को प्रत्याशी घोषित किया है। इंदौर-3 में चेहरा जरूर गोलू शुक्ला है लेकिन मैदानी चुनाव आकाश विजयवर्गीय ही लड़ रहे हैं। उन्होंने इंदौर-3 की बैठक लेकर कार्यकर्ताओं को किन मुद्दों पर फोकस करना है और कैसे कैंपेन होगा इस पर संबोधित किया। आकाश विजयवर्गीय का संबोधित करते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है, जिसमें वे इंदौर-3 में चुनाव जीतने के लिए बारीकी से रणनीति पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ शेयर करते नजर आ रहे हैं। उन्होंने ये तक कहा है कि अगर नगर निगम चुनाव की तरह इंदौर-3 विधानसभा के 10 में से 8 वार्ड हमने जीत लिए तो भी यहां से बीजेपी चौंकाने वाले परिणाम देगी और रिकॉर्ड मतों से जीत होगी।

विकास की लिस्ट इतनी लंबी की 100 पन्ने की किताब बन गई-हम लोगों ने एक-एक लोगों का काम किया है हो सकता है कहीं कुछ काम अभी पूरे नहीं हुए हो मगर हमारी नीयत में कभी कमी नहीं थी। हमारी नीयत हमेशा साफ थी। हो सकता है कहीं पर अभी काम चल रहे हो। कहीं रोड खुदा हुआ हो। कहीं पाइप लाइन डाल रही हो तो खुदाई की गई हो मगर जब विकास होता है, यह सब तो होता ही है। ढाई से 3 हजार करोड़ के हमने विकास कार्य कराए हैं। मैं जब लिस्ट बना रहा था तो टोटल 100 पन्ने की किताब बन रही थी। मैंने डिजाइनर को बोला कि इसे शॉर्ट करना है जितनी छोटी कर सकते हो करो। तब उसने 70 पन्ने की किताब बनाई, कहा कि इससे छोटी तो हो ही नहीं सकती इतना काम है। हो सकता है कभी कोई ठेकेदार गड़बड़ कर दें। कहीं कुछ समस्या आ जाती है तो हो सकता है कि कहीं पर कुछ कमियां भी हो मगर हम लोगों ने प्रयास 100 पर्सेंट किए हैं, इसलिए हम अधिकार से जाकर वोट की अपील लोगों से कर सकते हैं कि वह भारतीय जनता पार्टी

को वोट दें। नगर निगम चुनाव जितना काम किया तो रिकॉर्ड वोट से जीतेगी पार्टी-बूथ के सभी कार्यकर्ताओं से निवेदन करता हूं कि आप किसी का इंतजार मत करिए कि कोई नेता आएगा हमें मार्गदर्शन देगा। काम चालू कर दो। हमने बहुत काम किया है। आप लोगों को ध्यान हो जब पार्षद चुनाव में कार्यकर्ताओं ने विधानसभा 3 में 8 सीट (वार्ड) जीती थी। भारतीय जनता पार्टी दो अल्पसंख्यक बाहुल्य सीट ही हारी थी। बाकी सभी सीट हम जीते थे। अभी भी मुझे विश्वास है कि आप लोगों ने इतना ही काम कर दिया तो हम लोग चौंकाने वाले परिणाम देंगे रिकॉर्ड मतों से विधानसभा-3 में भारतीय जनता पार्टी जीतेगी।

विकास और सनातन पर जोर देने का दिया सुझाव-सभी घर-घर संपर्क करें। गोलू भइया के टीम के जो लोग आए हैं, वो आपका चुनाव में सहयोग करेंगे। जल्दी से पैम्फलेट भी डिजाइन कर लें। मेरा तो सुझाव है कि विकास और सनातन ये दो मुद्दों पर ही हमें हर जगह बात करनी चाहिए हर जगह काम करना चाहिए। ज्यादा इसमें इधर-उधर नहीं जाए। विकास किया है, विकास करेंगे और सनातन धर्म ये दो मुद्दे है। जय-जय सियाराम। मेरे सुझाव मैं अपने हिसाब से दे रहा हूं। बाकी वरिष्ठ लोग जो भी तय करेंगे वो आगे करेंगे।

अब ज्यादा समय नहीं वार्ड सम्मेलन शुरू करें-आकाश विजयवर्गीय ने कहा कि सबसे पहले वार्ड सम्मेलन में शुरू करना है। अब हमारे पास ज्यादा टाईम नहीं है। सीधे काम पर लगना पड़ेगा। वार्ड अध्यक्ष और पार्षद ये तय कर ले कि सबसे पहले वार्ड सम्मेलन हमें करना है। जैसे हमने विधानसभा-1 में भी किए थे। डेढ़ से दो हजार लोग एक-एक सम्मेलन में थे। वैसे ही वार्ड सम्मेलन करने हैं। इंदौर-1 में तो मोर्चों के भी हमने अलग-अलग किए थे। जैसे एससी मोर्चे, ओबीसी, व्यापारी प्रकोष्ठ का बड़ा सम्मेलन किया था। युवा मोर्चा के तो मैंने खुद वार्ड वाइज सम्मेलन किए थे। महिला मोर्चे के भी सम्मेलन हो रहे हैं। समय की थोड़ी हमारे पास बाध्यता है तो अगर हम चाहे तो वो भी कर सकते हैं लेकिन पहले वार्ड सम्मेलन ही हम करें। एक दिन में 3 वार्ड के सम्मेलन रख सकते

गोलू शुक्ला के लिए चुनौती, दो लाख वोटर विधानसभा तीन का फैसला करेंगे

विधानसभा तीन में 1 लाख 88 हजार 246 मतदाता हैं। अल्पसंख्यक वोट ज्यादा है। पुरुष मतदाता 94 हजार 437 है, तो महिला मतदाता 93 हजार 740 है। थर्ड जेंडर 69 है। पिटू जोशी के लिए यह विधानसभा नई नहीं है, पर गोलू शुक्ला के लिए चुनौती है । ये उनका क्षेत्र नहीं है। इस बार इस विधानसभा में सबसे ज्यादा असर डालेंगे तीस से उनचालीस साल उम्र के मतदाता । 48 हजार 527 है। पहली बार वोट डालने वालों की संख्या 3 हजार 665 है और बीस से उनतीस की उम्र के 34 हजार 58 मतदाता हैं, चालीस से उनपचास साल के 39 हजार 104, पचास से उनसाठ साल के 27 हजार 613 साठ से उनसत्तर साल के 16 हजार 659, सत्तर से उनअस्सी साल के 8 हजार 137 और अस्सी से उननब्बे साल के 2 हजार 518 मतदाता हैं, नब्बे से निन्यान्वें साल के 324 और बारह ऐसे हैं, जो 100 का आंकड़ा पार कर चुके हैं।7 हजार 629 नाम तो आठ दिन में कम हो गए हैं। वोटर लिस्ट में डुप्लीकेट नाम हटाए नहीं गए थे। तीन नंबर में सबसे कम मतदाता हैं। विधानसभा पांच में सबसे ज्यादा 4 लाख 13 हजार 447 मतदाता हैं। प्रचार के लिए कम समय ही मिलेगा ।

पूजा अर्चना के साथ सत्यनारायण पटेल का जनसंपर्क शुरु

इंदौर। विधानसभा क्षेत्र क्रमांक पांच के कांग्रेस के प्रत्याशी सत्यनारायण पटेल के द्वारा आज सुबह सादगी के साथ अपना जनसंपर्क शुरू कर दिया गया। पटेल के द्वारा गुरुवार प्रातः अपने निवास पर स्थित मंदिर में पूजा अर्चना करने के पश्चात सोमनाथ की जूनी चाल से अपना जनसंपर्क शुरू किया गया । इस क्षेत्र में जैसे ही नागरिकों से मेल मुलाकात के लिए पटेल पहुंचे तो उसके पहले से ही नागरिक जमा हो गए थे। इन नागरिकों के द्वारा अपने लाडले नेता का हारफूल माला से स्वागत किया गया। इस स्वागत के साथ ही पटेल का जनसंपर्क शुरू हो गया। पटेल के द्वारा आत्मीयता से जन-जन से मेल मुलाकात की गई। इस दौरान बड़ी संख्या में महिलाएं भी अपने घरों से निकलकर श्री पटेल के स्वागत के लिए बाहर आ गई । आज पटेल के द्वारा विकास नगर, अमर टेकरी, पंचम की फेल, रुस्तम का बगीचा, काजी की चाल और पहाड़िया कॉलोनी में जनसंपर्क किया जाएगा।

बनाई रणनीति

पटेल के द्वारा कल बिचौली मर्दाना में स्थित अपने निवास स्थान पर कार्यकर्ताओं और कांग्रेस नेताओं के साथ बैठक का आयोजन किया गया । इस दौरान चुनाव के लिए रणनीति तैयार करने का कार्य किया गया । सभी कार्यकर्ताओं को अपने-अपने क्षेत्र में मैदानी कार्य करने के लिए कहा गया है ।

समूह निदेशक डॉ. द्विवेदी ने किया सीपीएलवीडब्ल्यू कोर्स पूर्ण

इंदौर। आईआईएम इंदौर द्वारा आयोजित (मार्च से अक्टूबर 2023) 8 महीने के लीडरशिप कोर्स सी.पी.एल.वी.डब्ल्यू को डॉ. पुनीत द्विवेदी ने शानदार तरीके से पूर्ण किया है। भारतीय प्रबंध संस्थान द्वारा उक्त लीडरशिप कोर्स में पूरे भारत के विभिन्न प्रदेशों से 50 अभ्यर्थियों का चयन किया गया था। मॉडर्न ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स इंदौर में प्रोफेसर एवं समूह निदेशक के रूप में कार्यरत डॉ. द्विवेदी के अनुसार कोर्स में लीडरशिप डेवलपमेंट, आपदा प्रबंधन, व्यापार व्यवहार, सिमुलेशन गेम्स, ऑगेर्नाइजेशन डेवलपमेंट, पॉलिटिकल रिस्क एनॉलिसिस, बिल्डिंग रोबस्ट ऑगेर्नाईजेशन, आर्ट ऑफ पर्सुएशन एंड इंफ्लूएंस, ऑगेर्नाइजेशनल लीडरशिप, चेंज मैनेजमेंट, टीम बिल्डिंग, निगोशिएशन और परसेप्शन मैनेजमेंट इन डिजिटल एरा इत्यादि विषयों को गहनता से समझाया गया। कुल 60 सत्रों में इस कोर्स को ऑनलाईन एवं ऑफ लाइन दोनों प्रकार से आयोजित किया गया। इसमें 12 सत्र भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर के परिसर में हुए। ग्रेजुएशन सेरेमनी में भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर के डीन (फैकल्टी) प्रो. प्रवीन पाणिग्रही के हाथों से डॉ. द्विवेदी को प्रमाण-पत्र एवं अंक-पत्र प्राप्त हुए। बेहतरीन वक्ता और नव उद्यमियों के मार्गदर्शक डॉ. द्विवेदी की इस उपलब्धि पर परिजनों सहित इंस्टीट्यूट्स के सभी सहयोगियों, सहकर्मियों एवं प्रबंध समिति ने भी बधाई दी है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी जयश्री जैन द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स 13, प्रेस कॉम्प्लेक्स ए.बी. रोड इंदौर से मुद्रित एवं 22, प्रेस काम्पलेक्स, प्रेस हाऊस, ए.बी. रोड इंदौर 452008 से प्रकाशित। प्रधान संपादक- डॉ. राजेश जैन, मो. 9425322301 (डाक पंजीयन MP/IDC/1462/2016-2019)